

अन्नपूर्णा स्त्री. (तत्.) भगवान शिव की पत्नी अन्न की देवी मानी गई हैं, अन्नदात्री।

अन्नप्राश/अन्नप्राशन पुं. (तत्.) [अन्न+प्राश] 1. अन्न का सेवन, भोजन 2. एक वैदिक संस्कार जिसमें शिशु को जन्म से पाँचवें या छठें मास में प्रथम बार अन्न खिलाया जाता है।

अन्नप्राशन पुं. (तत्.) अन्न का प्राशन अर्थात् खिलाना या चखाना, वह संस्कार जिसमें शिशु को पहली बार अन्न चखाया जाता है।

अन्नमय वि. (तत्.) [अन्न+मय] 1. जो भोज्य पदार्थ अन्न से बना हो या अन्नयुक्त हो जैसे- मोदक अन्नमय मिष्ठान है, किंतु पेड़ा या पेठा नहीं 2. बहुत अधिक अन्न से युक्त।

अन्नमय कोष पुं. (तत्.) जीवात्मा को आवृत करने वाले पांच कोशों में से पहला कोश जिसका पोषण अन्न से होता है, स्थूल शरीर।

अन्न-वस्त्र पुं. (तत्.) जीवन जीने के लिए आवश्यक साधन अनाज और कपड़ा, रोटी और कपड़ा।

अन्नविकार पुं. (तत्.) 1. अन्न का विकृत या परिवर्तित या उससे निर्मित रूप 2. किसी अन्न के खाने से शरीर में होने वाला कोई विकार या दोष 3. अन्न सेवक से शरीर में बनने वाले रक्त, रस, मांस, अस्थि आदि।

अन्न-व्यवहार पुं. (तत्.) [अन्न+व्यवहार] 1. लोगों का परस्पर अन्न या अन्न से संबंधित बनी कोई वस्तु देने-लेने का व्यवहार या रीति-रिवाज 2. खान-पान से संबंधित प्रचलित कोई परंपरा, नियम या प्रथा या रीति।

अन्नशाला स्त्री. (तत्.) [अन्न+शाला] 1. पर्याप्त प्ररूप से अन्न रखने का स्थान, गृह 2. अन्न के भंडारण का स्थान, अन्न भंडार-गृह।

अन्नशेष पुं. (तत्.) 1. थाली या पत्तल में परोसे गए भोजन को खाने बाद उसमें कुछ बचा हुआ अन्न का अंश, जूठन 2. अनाज को पीसने या छानने के बाद बचा हुआ अन्न का कुछ अनुपयोगी अंश, भूसी, चोकर आदि।

अन्नसत्र पुं. (तत्.) वह संस्थान या आश्रम जहाँ साधुओं, फकीरों, असहायों, गरीबों व अपाहिजों आदि को नित्य ही मुफ्त भोजन प्रदान किया जाता है।

अन्नागार पुं. (तत्.) अन्न भंडार, खाद्यान्न भंडार।

अन्नोदक पुं. (तत्.) [अन्न+उदक] अन्न और उदक (जल), अन्नोदक ही जीवन का आधार है।

अन्य वि. (तत्.) दूसरा, अन्य से, भिन्न, इतर।

अन्यतः क्रि.वि. (तत्.) 1. अन्य से, किसी और से 2. किसी और स्थान से, कहीं ओर से।

अन्यतम वि. (तत्.) जिसके समान दूसरा कोई न हो, सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम।

अन्यतर वि. (तत्.) [अन्य+तर] 1. दो में से एक 2. दूसरा 3. जो किसी अन्य तरह का हो, भिन्न प्रकार का, जैसे- इनसे अन्यतर व्यक्ति वांछित है।

अन्यता स्त्री. (तत्.) 1. किसी के अन्य होने की अवस्था या भाव। 2. भिन्नता, अन्यत्व 3. परायापन विलो. अनन्यता।

अन्यत्र वि. (तत्.) किसी भिन्न स्थान पर, और जगह, दूसरी जगह, भिन्न स्थान पर।

अन्यत्रवासी वि. (तत्.) जो रहता कहीं हो और व्यवसाय किसी अन्य स्थान पर करता हो, जैसे- 'अन्यत्रवासी पूंजीपति'।

अन्यत्र सेवा स्त्री. (तत्.) प्रशा. विभागीय स्वीकृति से सरकारी कर्मचारी की किसी गैर-सरकारी प्रतिष्ठान में की जाने वाली सेवा foreign service तु. प्रतिनियुक्ति।

अन्यत्रस्थिति स्त्री. (तत्.) अपराध आदि के होने के स्थान से भिन्न किसी अन्य स्थान पर होना, अन्यत्र उपस्थिति।

अन्यथा वि. (तत्.) 1. विपरीत, उलटा, विरुद्ध 2. झूठा, असत्य, वास्तविकता से विपरीत 3. भिन्न अर्थ में उदा. आप इस बात को अन्यथा